RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper
Available online at: www.rhimrj.co.in

राजस्थान में महिला पत्रकारिता

डॉ. पूनम चौहान
अलवर (राजस्थान)

Abstract: राजस्थान जैसे प्रदेष में जो सामन्ती शासन व्यवस्था के कारण हर क्षेत्र में अन्य राज्यों की तुलना में पिछड़ा हुआ रहा है, यद्यपि पत्र पत्रिकाओं का प्रादुर्भाव बहुत विलम्ब से हुआ, तथापि अपने एक शताब्दी के इतिहास में अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत रहते हुए भी उन्होंने भाषा और साहित्य के विकास में जो उल्लेखनीय योगदान किया है, उसका आकलन एक स्वतंत्र ग्रन्थ का विषय है।'' राजस्थान में पत्र–पत्रिकाओं का दीर्घ जीवन दुर्लभ ही रहा। कुछ पत्र बन्द हुए, तो कुछ नये निकले, किंतु उनके प्रकाषन का सिलसिला बराबर जारी रहा।

राजस्थान की हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं के योगदान को भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखने पर ज्ञात होता है कि उन्नीसवीं सदी के अन्तिम चरण में हिन्दी पत्रकारिता ने न केवल खड़ी बोली के स्वरूप को विकसित करने में सहयोग दिया, अपितु उसके माध्यम से राजनीति, इतिहास, षिक्षा और विज्ञान आदि विषयों की जानकारी जन–सामान्य तक पहुँचाई, जो उस युग की सबसे बड़ी आवष्यकता थी।

इसके बाद बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में भी प्रदेष से जो पत्र–पत्रिकाएँ राजस्थान से निकली चाहे वे साप्ताहिक हो या मासिक हो या त्रैमासिक, उन्होंने भी हिन्दी की तत्कालीन धारा के साथ अपना संगम स्थापित कर गद्य और पद्य की भाषा के स्वरूप को विकसित करने, साहित्य के प्रति लोगों में रूचि विकसित करने, लेखकों का एक समुदाय खड़ा करने और उनसे विविध विधाओं में रचनाएँ लिखवाने की प्रेरणा देने का ऐतिहासिक कार्य किया।

हिन्दी के परिष्कार और उसके प्रांजल स्वरूप के विकास में राजस्थान के तत्कालीन पत्रों का योगदान किस सीमा तक रहा, इसे समझने के लिए 'समालोचक' से एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है :–

''बांग्लादेष में कोलाहल के साथ–साथ स्वदेषी वस्तुओं के प्रचार का आन्दोलन फैलता जा रहा है। गाँव–गाँव में सभा होती है। स्वदेषी आंदोलन देष भर में व्याप्त होना चाहिए। बंगाली पंडितों ने शास्त्रों में से स्वदेषी वस्तुओं के श्लोक खोजने आरम्भ किये है।''

उक्त उद्धरण से इतना स्पष्ट है कि यहाँ के पत्रकार हिन्दी गद्य में पंडिताऊ पत्र के समर्थक नहीं थे। वे सीधी और बोधगम्य हिन्दी के पक्षधर थे।

निष्चय ही राजस्थान की पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाषित कथाओं के माध्यम से आज के मनुष्य के अस्तित्व और उसके द्वन्द्वात्मक पक्ष तथा संघर्ष को वाणी दी है और इस प्रकार अपने युग को प्रतिबिम्बित करने में अपना योगदान किया है।

Key words: अस्तित्व, औद्योगीकरण, महिला पत्रकारिता, स्वतन्त्रता, पत्र–पत्रिकाएँ, समाजवाद, स्वाध्याय, समाचार पत्र, तकनीकी, जागृति, अवसादग्रस्त, उन्नति, मार्गदर्शन, मूल सिद्धान्त

शोध विस्तार –

आज जहाँ पत्रकारिता के क्षेत्र में महिलाओं ने अनेक हिंदी भाषी क्षेत्र में अपना परचम फहराया है। और राजधानी दिल्ली में इन्होने विशेष हाथ आजमाए हैं, वहीं राजस्थान की महिला पत्रकारिता भी लगातार स्वंय को इतिहास के पन्नो में दर्ज कराने में पूरी तरह जुटी है। भारत के सबसे बड़े प्रदेश राजस्थान मे यदि हम इनकी संख्या पर गौर करे तो हम पाते है कि इनकी संख्या संतुष्टि प्रदान करने में भी सहायक नहीं। यद्यपि राजस्थान की राजधानी जयपुर में यह संख्या लगभग ड़ेढ़ सौ है तथापि राजस्थान के अन्य जिलों की स्थिति देखें तो महिला पत्रकारिता में स्थापित पत्रकारों के गिने–चुने नाम ही देखने को मिलते है और कई जिले तो ऐसे है जहाँ समाचार पत्र कार्यालय में एकमात्र महिला पत्रकार मिली। लगातार जब हम किसी कार्य में जुटे रहते है तो उस कार्य में न सिर्फ तकनीकी की जानकारी होती है बल्कि समस्याओं से रूबरू होते हुए उस कार्य को करने का एक बड़ा अनुभव भी हमें प्राप्त हो जाता है। राजस्थान में महिला पत्रकारिता पर किए गए सर्वे के दौरान में महिला पत्रकार अपनी वर्तमान स्थिति से लगभग असंतुष्ट ही नजर आई। जो स्वतंत्र महिला पत्रकार राजस्थान के अलावा अन्य प्रदेशों के पत्र–पत्रिकाओं में लेखन स्वरूप लंबे अर्से से जुड़ी मिली, उनके अनुभव कुछ रोचक रहे, लेकिन उनकी संख्या भी बहुत ज्यादा नहीं है। अधिकांश पत्रकार अपने कार्य को ढ़ोती नजर आई और कुछ इस संघर्ष में जुझती दिखाई दी, लेकिन उनके चेहरे पर तनाव साफ दिखाई दिया।

''राजस्थान में पत्रकारिता के क्षेत्र में महिलाओं का कम होने का प्रमुख कारण अशिक्षा भी है। आज भी यहाँ 56 प्रतिशत महिलाएँ निरक्षर है।''[1] ऐसे में जो शिक्षित महिलाएँ हैं, उन्होंने ही नारी स्थिति व इनकी जागृति संबंधी अभियान चलाए है। और इन्ही का संघर्ष आज महिला पत्रकारिता के रूप में जारी हैं।

पत्रकारिता के बदलते मूल्यों व परिवेश से यें पत्रकार भी प्रभावित हैं और यही कारण है कि इन महिला पत्रकारों को आज भी अपनी स्थिति को बनाए रखने में अपना कैरियर बनाने में तथा इस क्षेत्र में उन्नति, प्रगति करने में अनेक मुश्किलों का सामना करना

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

पड़ रहा है और अपनी महत्वाकांक्षाओं के अनुरूप परिणाम कम मात्रा में मिलने के कारण ये कुण्ठित तथा अवसादग्रस्त भी रही। लेकिन कुछ चमकते सितारों को हम देखें तो बड़ी पत्रकार भी उन्हीं की रोशनी में दिखाई देने लगती है। ऐसी स्थिति राजस्थान में अभी न के बराबर देखने को मिलती है कि कोई माता–पिता अपनी बेटी को पत्रकार बनाना चाहते हों। पत्रकारिता में आज माहौल को सुधारने की, पुराने ढर्रे में बदलाव या कहें कि नया जो गलत मार्ग इस क्षेत्र के दिग्गजों ने अपना लिए है उनमें परिवर्तन की विशेष जरूरत है। पुरूष पत्रकारिता समाज में महिला पत्रकारों को यहाँ अभी वास्तव में स्वीकार नहीं किया गया है। ये तो महिलाओं द्वारा ठानी गई एक जिद प्रतीत होती है।

जरूरी है कि ये महिलाएँ बदलते परिवेश में पत्रकारिता के मूल सिद्धान्तों व आदर्शो के अनुरूप ही आगे बढ़े और विरोध करने वाले या बाधित समाज या साथी सहकर्मियों का अपने कार्यो से मुँह बंद करें और समाज को स्वयं की स्वीकारिता हेतु विवश कर दें।

''राजस्थान में महिलाओं के इतिहास पर गौर करे तो हम पाते है कि राजस्थान की महिलाओं की स्थिति लंबे समय से दयनीय रही अतः इनका संघर्ष भी लम्बे समय से जारी रहा। राजस्थान में देश के अन्य राज्यों की तुलना में रजवाड़ों व जागीरदारों का जबरदस्त दबदबा रहा, लेकिन जैसे ही सामन्ती व्यवस्था हटी तथा औरतों के लिए अवसर आए, शिक्षा का प्रचार–प्रसार हुआ। अपनी स्थिति पर उनके बीच चर्चा व मंथन की शुरूआत हुई। राजस्थान की आम औरतों ने अपनी आवाज को बुलन्द करना शुरू किया। यह एक पुनर्जागरण की शुरूआत थी।''[2]

''राजस्थान की महिलाओं के संघर्ष की यह विशेषता रही कि इनका रूझान पुरूषों के खिलाफ न होकर बराबरी व अवसरों की समानता की तलाश की ओर ही अधिक रहा। इस संघर्ष में राजस्थान की मजदूर महिलाओं का योगदान विशेष महत्वपूर्ण रहा और इस वर्ग की महिला ने ही आंदोलनो के नेतृत्व मुख्यतया किए।''[3]

कई प्रमुख महिला पत्रकार ऐसी है, जिन्होंने पत्रकारिता में काफी कार्य किया है। उनमें प्रमुख है, जैसे–राजधानी जयपुर से आशा पटेल, ममता शर्मा, शीला रानी, पायल, चौधरी, संतोष शर्मा, नीति भट्ट, सरोज शर्मा बबीता शर्मा, कुसुम कोठारी, चम्पा शर्मा, कमला सैनी, सरिका चौधरी, मंजुला, रेणु जुनेजा, आशा देवी, प्रतिमा सिंह, मंजू महेश्वरी, सुमन जैन, गीता यादव, ममता जैतली, सुनीता चतुर्वेदी, अनु अग्रवाल, मंजू गुप्ता, प्रीति श्रीमाली, आशा पारीक, सुमनलता शर्मा, राजबाला शर्मा, मोनिका जोशी इत्यादि।

जयपुर राजस्थान की **डॉ0 मजूला सक्सेना**– मंजूला जी पिछले 22 वर्षो से लगातार पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय हैं। जिनकी लगभग 24 पुस्तकें प्रकाशित हुई है।

मंजू जी की संगीत, गृहविज्ञान व मनोविज्ञान विषय में भी विशेष रूचि रही है। इनका प्रारंभिक लेखन कार्य मंजू जी नाम से प्रकाशित हुआ है। '**दूसरों को नहीं स्वयं को देखें, परखें**'[4] शीर्षक से 1980 में दुर्गापूजा में प्रकाशित आपका व्यग्ंय लेख काफी रोचक रहा, जिसमें आस–पास के वातावरण में व्यक्ति किस प्रकार बेमतलब ही स्वयं के द्वारा की गई बेवकूफियों पर भाषण देकर स्वयं को आरोप मुक्त करता चलता है। इसकी चर्चा कई उदाहरणों द्वारा की गई है। '**उत्साह कम क्यों हो जाता है**'?[5] शीर्षक से इन्होंने प्रेरणात्मक लेख लिखा, जिसमें बताया गया है कि जब नववर्ष प्रारभं होता है, तो लोगों द्वारा अनेक कार्यो को करने के संकल्प लिए जाते है किंतु बाद में वे कार्य या तो शुरू ही नहीं किए जाए या अपूर्ण ही रह जाते है। अधिकाँशतः ऐसी स्थितियों से बचने के लिए आपने अनेक उपाय बताए है, जिससे योजनाबद्ध तरीके से सही समय पर पूर्वानियोजित कार्य किए जा सकते है और साथ ही आत्मविश्वास में वृद्धि भी की जा सकती है। इन्होनें बालहंस में देखो, कहानी लिखों, में कहानियाँ लिखी है। **'गर्मियों में क्या पहने**?'[6] नामक लेख में आपने गर्मियों में बच्चों हेतु सुविधाजक कपड़ों की ओर ध्यान दिलाया है तथा बड़ों को भी कैसे–कैसे कपड़े पहनना उचित है। इस पर विस्तार से जानकारी दी है। **'देश का नुकसान**'[7] शीर्षक से इन्होंने बहुत रोचक व प्रेरणादायक कहानी लिखी।

'ऐसा क्यों होता है?'[8] 'बाल कहानी में मेले के आनंद के बीच जब बच्चे ने दो मुर्गो को लड़ते देखा और लोगों को हंसते हुए देख, तो उसका बाल हृदय बहुत दुखी हुआ। घर आकर उसने मम्मी–पापा से इसका जवाब माँगा कि ऐसा क्यों होता है ? तो उनके पास जवाब नहीं था।

नारी विषयक लेखों में **''भारत तुम्हारा आदर्श है सीता सावित्री''**[9] में स्वामी विवेकानंनद जी की नारी विषयक अवधारणा की वर्तमान में प्रासंगिकता बताई

डॉ0 मंजूला जी पत्रकारिता के विभिन्न अनुभवों से गुजर चुकी है और अब भी उनका कार्य सतत् जारी है।

आशा पटेल –लगातार 30 वर्षो से पत्रकारिता में सक्रिय आशा पटेल राजधानी जयपुर में किसी परिचय की मोहताज नहीं है। प्रेस क्लब, जयपुर की लिस्ट में महिला पत्रकारों में सर्वोच्च स्थान पर जगह बना चुकी आशा जी मातृभाषा हिंदी के अतिरिक्त गुजराती, बंगला भोजपुरी, राजस्थानी तथा अंग्रेजी भाषाओं का भी ज्ञान रखती है। राजस्थान के अतिरिक्त इनकी कार्य सक्रियता से जुडे अन्य स्थानों में प्रमुख है। वाराणसी, पटना, सहरसा, मधुबनी, अहमदाबाद आदि। आाशा जी निरतंर सन् 1977 से पत्रकारिता कर्म से जुड़ी हैं और इनका अधिकार क्षेत्र समाज, विज्ञान, राजनीति, संस्कृति व लोकरूचि रहा। इनकी ख्याति संपादकीय प्रयोजना विषयों के चयन पड़ताल रपट, तथा नारी संघर्ष को अभिव्यक्ति दिलाने से प्रमुख रही।

इनका एक लेख 1989 में **'क्या सोचती है राजस्थान की महिला विधायक'** शीर्षक से प्रकाशित हुआ, जिसमें आशा जी ने राजनीति में तीस प्रतिशत आरक्षण के प्रश्न पर तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गाँधी द्वारा कही गई दोहरी बातों पर आक्षेप किया तथा तत्कालीन महिला विधायकों से बातचीत कर उनके विचारों का प्रकाशन किया ।[10]

उपर्युक्त के अतिरिक्त भी राजस्थान की कुछ अन्य पत्र पत्रिकाओं से संबंधित महिलाएँ भी हैं, जो राज्य सरकार द्वारा पंजीकृत महिला पत्रकार है और किसी न किसी रूप में सहयोग कर रही है **जैसे-**.पायल चौधरी, संतोष शर्मा, सरोज शर्मा, बबिता शर्मा, बिमला देवी, ज्योति, कमला पांचाल, नीतू जैन, सुमित्रा वर्मा, सुमन शर्मा, मंजूलता खींची, सरोजनी शर्मा, सुश्री कांता जैन, मधु जाजू, अनामिका जैन, प्रार्थना त्रिपाठी, भावना बनवाड़ी, सना खांन, मधु बेनर्जी, स्नेहा डोयल, शिवानी माथुर, वदंना शर्मा, श्रीमति बाला माथुर, भंवरी देवी, ज्योति व्यास, शकुन्तला सरूप्रिया, हेमलता शर्मा, श्रीमति मंजू सुराणा'और कृष्णा सोनी इत्यादि।

निष्कर्ष – इस प्रकार राजस्थान की महिला पत्रकारिता मानव जीवन की विकास यात्रा को एक नया दिशा बोध दे रही है। इन पत्रकारों ने पुरूष प्रधान समाज में जिस संघर्ष के साथ अपनी जगह बनाई और विशेषतः महिला वर्ग के लिए इनका जो योगदान है, वह मुहिम काबिले तारीफ है।

सन्दर्भ सूची –

1. राजस्थान में हिन्दी पत्रकारिता–मनोहर प्रभाकर, पृ. 48,195
2. समालोचक, वर्ष 1905, पृ. 49
3. दुर्गापूजा–मिलन मंदिर, बिलासपुर (छत्तीसगढ़) 1980
4. राजस्थान पत्रिका, जयपुर, जनवरी 3,1990
5. राजस्थान पत्रिका, जयपुर, जनवरी 12,1992
6. बालहंस, अगस्त II 1991
7. बालहंस, अक्टूबर II 1991
8. चौथी दुनिया, 6–12 अगस्त, 1989
9. आधी आबादी का संघर्ष – ममता जैतली, श्री प्रकाश शर्मा, पृ. 19